

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 25.07.2016)

■ अंक-596 ■ तारीख- 26 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण पक्ष - 7 ■ मंगलवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

(पृष्ठ-1)

धर्म का आचरण

हमारे विभिन्न शास्त्रों के सूत्र, आचार्यों की सीख, सन्त-महात्माओं के सन्देश बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि हमें सदा धर्म का आचरण करना चाहिए। तो, हमारे मन में यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि धर्म क्या है? धर्म का स्वरूप क्या है? वैसे तो इन प्रश्नों का उत्तर सरल सहज बोधगम्य शब्दों में भी दिया जा सकता है, और विशद-गम्भीर शास्त्रीय भाष्य शैली में भी। परन्तु, आशय तो केवल धर्म के उस आचरण से है, जिसे सामान्य जन समझ सके और तदनुसार अपने व्यवहार में ला सके। एक बात तो मौलिक रूप से सर्व स्वीकार्य है कि जिस व्यवहार से, जिस आचरण से, जिस कर्म से किसी अन्य को पीड़ा हो, असुविधा हो - ऐसा आचरण और व्यवहार कभी धर्म सम्मत नहीं कहा जा सकता। अतः इस बारे में सदा सतर्क एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है कि हम मन-वचन-कर्म से कभी भी ऐसा कुछ नहीं करें जिससे किसी को तकलीफ होती हो, भावनाओं को चोट लगती हो, किसी के स्वार्थ की हानि होती हो। यदि हम ऐसा करना सीख सकें, उसे अपने आचरण में ला सकें, तो हम आश्चर्य हो कर कह सकते हैं कि हम धर्म का आचरण कर रहे हैं।

हमारे इस तरह के आचरण से किसी को कोई दुःख नहीं पहुँचेगा, और हम अनायास ही अधर्म आचरण से मुक्त हो जाएँगे, क्योंकि दूसरों को दुःख देना ही अधर्म है। यदि हम दूसरों को सुख देना, आनन्द देना, प्रियता देना सीख सकें तो निश्चय ही हमारा आचरण धर्मानुकूल होगा, क्योंकि जीव मात्र को सुख देना ही धर्म है।

अब इस तरह के आचरण के परिणाम पर विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा। सत्कर्म का सुफल और दुष्कर्म का कुफल मिलता है - यही हमारी धार्मिक मान्यता और नैतिक विश्वास है।



नदी का पानी मीठा होता है,
क्योंकि वह बहती रहती है, देती रहती है
सागर का पानी खारा होता है,
क्योंकि वो हमेशा ठहरा रहता है, लेता रहता है,
यही जिंदगी है, देते रहोगे तो सबको मीठे लगोगे,
लेते रहोगे तो खारे लगोगे,
और अगर रुक गये तो सबको बेकार लगोगे।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

जब मैं ठगी का शिकार हुआ



अरे भाई! शुद्ध डिस्ट्रिक्टल वॉटर चाहिये। यदि स्याही सामान्य वॉटर में बनायेंगे तो वॉटर सड़ेगा तो स्याही भी दुर्गन्धित हो जायेगी। डिस्ट्रिक्टल वॉटर में बनानी चाहिये। डिस्ट्रिक्टल वॉटर कैसे करें? अरे भाई! भीलवाड़ा गाँव में आयुर्वेदिक की बहुत बड़ी फ़ैक्टरी है, और वर्षों से बन्द है। आप खोल लेना। इतना रूपया आप दे दो खरीद लो। और उसमें एक तरफ पानी गर्म करना, एक तरफ सिलेण्डर में अपने आप पानी आ जायेगा। बड़े उत्साह के साथ साईकिल के पीछे रख कर के सिलेण्डर लाये। वर्षों से ढकन खुला नहीं था, बड़ी मुश्किल से घण्टा भर लगा पिलार वगैरह से खूब जोर लगाया, फिर जाकर खुला, तो उसमें से खूब जोर से आवाज आई। एकदम चारों तरफ लोग चौंक पड़े। ये क्या हो गया? अन्दर से गन्ध निकली, चारों तरफ फैली। ऐ परमात्मा! रक्षा करो। प्रभु पीर हरो, पीर हरो भगवान पीर हरो किसी को कोई तकलीफ ना हो। अरे भाई कैलाश जी! इनको तो क्या कहे? दूसरा कोई होता तो अभी थाने में रिपोर्ट दर्ज करा लेते चलो हमारे कुछ बिगड़ा नहीं। सिलेण्डर भी थोड़ा बिखर गया। बहुत जोरदार धमाका हुआ। ईश्वर की कैसे कृपा है। स्याही बनाना चालु किया, अन्दर स्याही को उबालते, डिस्ट्रिक्टल वॉटर करते, अन्दर हाइड्रोजन मिलाते, ग्लिसरिल मिलाते। स्याही बनना प्रारम्भ हुआ - बड़ी मात्रा में।

क्रमशः अगले अंक में ...

स्वर्ण मंदिर की तर्ज पर दमकेगा सांवलियाँजी मंदिर

प्रख्यात कृष्णधाम श्री सांवलियाँजी मंदिर को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की तर्ज पर चमकाया जा रहा है। मंदिर परिसर के कुछ खंबों एवं मेहराबों को गुजरात के कारीगर निखार रहे हैं लेकिन यह सब बतौर नमूने के कराया जा रहा है। पूरे मंदिर की आभा निखारने के काम को नमूना देखकर ही अनुमति दी जाएगी।



सांवलियाँजी मंदिर मंडल को केडमियम कार्य के लिए बोर्ड व प्रशासन की स्वीकृति नहीं मिली है। सर्वसम्मति बनी है तो इसका कार्य आगे बढ़ाया जाएगा। यानी पूरे मंदिर को चमकाया जाएगा। यह कार्य मंदिर के अंदर तथा बाहर हो जाता है तो

यह अमृतसर के स्वर्ण मंदिर सा लगेगा। राजस्थान में ऐसे कई जैन मंदिर हैं जहां पर यह लेप हुआ। गुजरात का स्वामी नारायण मंदिर, सोमनाथ मंदिर, माण्डवी मंदिर, अहमदाबाद का जैन मंदिर, राणी-सती मंदिर, सहारनपुर का हनुमान मंदिर इस लेप से चमक चुका है।

शिक्षित होने का सही मतलब

हमें शिक्षित किसे मानना चाहिए?

पहले, वे जो रोजाना आने वाले हालात का सामना सही ढंग से करते हैं और वे जो हालात से सामना होने पर सही निर्णय लेने और सही कदम उठाने में शायद ही कभी चूकते हों।

दूसरे, वे जो दूसरों के साथ व्यवहार में बड़प्पन दिखाते हैं, दूसरों के अप्रिय व्यवहार और बातों का बुरा नहीं मानते और अपने सहयोगियों के साथ उत्तम बने होते हैं, जितना कि एक इंसान हो सकता है। और आगे, वे जो अपनी खुशियों पर काबू रखते हैं, और कठिनाईयों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते, और कठिन परिस्थितियों का मुकाबला एक बहादुर इंसान की तरह



करते हैं जो इंसानी फितरत है। और सबसे बड़ी बात है कि वे लोग जो सफलता मिलने पर बिगड़ते नहीं, जो अपनी असलियत से मुँह नहीं मोड़ते, साथ ही बुद्धिमान और धीर-गंभीर व्यक्ति की तरह दृढ़ता से जमीन पर पैर जमाए रखते हैं, तुम्हें से मिली अच्छी चीजों पर खुश होने के बजाए जन्म से मिली

काबिलियत और बुद्धि से प्राप्त कामयाबियों पर खुश होते हैं। खुश होने की ऐसी प्रवृत्ति उनकी बचपन से ही होती है। जिन लोगों के चरित्र में इनमें से एक-दो नहीं, बल्कि सारे गुण हैं, जिन्होंने वे सभी बातें सीखी हैं -वे ही सर्वगुण सम्पन्न, सच्चे अर्थों में शिक्षित हैं।

उच्च रक्त-चाप की प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्सा में उच्च रक्त चाप का निदान बड़े ही वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है और किसी भी अन्य तरह की दवाएँ या नुकसान पहुँचाने वाली, हानि करने वाली कोई वस्तु प्रयोग में नहीं ली जाती है।

मर्प jDr pk ds djk. & 1. मानसिक तनाव 2. मेहनत व व्यायाम का अभाव 3. ज्यादा नमक व चीनी का प्रयोग 4. धूम्रपान व मद्यपान व कवाब का प्रयोग 5. दवाओं का अधिक प्रयोग 6. हार्मोन्स की दवाओं या गर्भ निरोधक गोण्डियों का लम्बे समय तक प्रयोग 7. ज्यादा तेल व वसा का प्रयोग 9. भिण्डी, रतालु, अरबी का ज्यादा प्रयोग 10. मैदा, बेसन, बाजारू मिठाइयों 11. चूसते रहें दिन में 3-4 बार ज्यादा तली भुनी वस्तुओं का प्रयोग। निवारण - 1. सबसे प्रमुख



चिकित्सा वही है जिसमें कारण का निवारण होता है। यानी उन कारणों का दूर करें जिनसे उच्च रक्त चाप होता है। सहायक उपचार - 1. उच्च रक्त में 2-3 गिलास पानी (ठंडा) पिलावें 2. मुँह में किसमिस या मुनक्का (दाख) रखें 5-7 नग, जिसको चूसते रहें दिन में 3-4 बार 3. मौसमी रस। संतरे के रस का बराबर सेवन करें। 4. सौंफ का पानी, सेव, अनार,

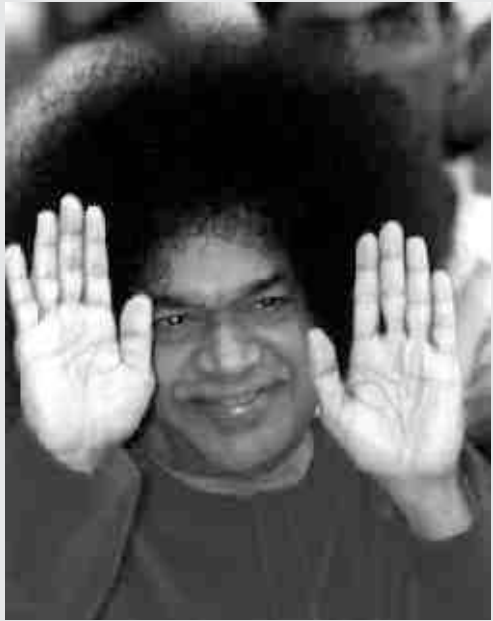
शीतकारी, प्राणायाम 2. भ्रामरी व चन्द्र भेदी प्राणायाम 3. ओसुम उच्चारण 4. उत्तानपादासन, पवन मुक्तासन 5. पर्वतासन, भुजंगासन, नौकासन 6. सिद्धासन, पद्मासन। भोजन उपचार/आहार उपचार (आहार उपचार (सब्जी)) - 1. टिण्डा, लोकी, परवल, धनिया, पुदीनहरा, तोरई, खीरा, पेठा, फालसा, प्याज व लहसुन का रस। फल-फालसा, केला, संतरा, मौसमी, अनार, सेव, नाशपती, पपीता, लीची, गुजबेरी, ब्लैक बेरी, रात्रि का भीगा हुआ मुनक्का, बादाम, मूंगफली इत्यादि, सोयाबीन का दही व छाछ, तरबूज के बीज, खसखस आदि का प्रयोग रस या सूप, सलाद के साथ व मिक्स करके भी ले सकते हैं।

मीनाक्षी अम्मन मंदिर (तमिलनाडु)



तमिलनाडु में मदुरै शहर में स्थित मीनाक्षी अम्मन मंदिर प्राचीन भारत के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। यह मंदिर भगवान शिव व मीनाक्षी देवी पार्वती का है। मीनाक्षी मंदिर पार्वती के सबसे पवित्र स्थानों में से एक है। मंदिर का मुख्य गर्भगृह 3500 वर्ष से अधिक पुराना माना जाता है।

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



Hlxoku dsgkkaea, d ; U- cu t kvka ft l dle dsfy; shlxoku rfgkjki z k djuk plq\$mi hdk Zdksvi us} kj k gksnka

गायत्री महामन्त्र का भावार्थ



ऊँ (परमात्मा) भूः (प्राण स्वरूप) भुवः (दुःख नाशक) स्वः (सुख स्वरूप) तत् (उस) सवितुः (तेजस्वी) वरेण्यं (श्रेष्ठ) भर्गः (पाप नाशक) देवस्य (दिव्य) धीमहि (धारण करें) धियो (बुद्धि) यः (जो) नः (हमारी) प्रचोदयात् (प्रेरित करें) । m l qk Lo: i] J \$B] r \$ Lo] i ki uk kd] ck k Lo: i cā d ksgē /k j . k d j r s g \$ t k s g e j h c d j d k s l 4 L e k Z d h v k s j / 2 j . k k n s k g \$

नीति की बात

t kM af/k ksgj fr fl øfr okp l R a] ekuklfr afn' kfr i ki ei kdj kfr A ps%cl kn; fr fn[kqrufk d hfr z] l R æfr %dFk fdau dj kfr i qleAA

अच्छी संगति जीवन का आधार है अगर अच्छे मित्र साथ हैं तो मुख भी ज्ञानी बन जाता है झूठ बोलने वाला सच बोलने लगता है, अच्छी संगति से मान प्रतिष्ठा बढ़ती है पापी दोषमुक्त हो जाता है। मिजाज खुश रहने लगता है और यश सभी दिशाओं में फैलता है। मनुष्य का कौनसा भला ऐसा नहीं है जो नहीं होता।

किस भावना से भारी पाप अर्थात् हिंसा होती है?

विश्व के हित में अपनाहित है-इस उदार भावना का जब लोप हो जाता है-और इसके विरुद्ध संकुचित स्वार्थवासना जब प्रबल हो जाती है, तब मनुष्य स्वार्थसिद्ध के लिए हिंसा करने लगता है। &Lohel R HDR t h

त्याग और ग्रहण



पहले अज्ञान का- मिथ्या का त्याग करना होगा, तभी सत्य अपने को प्रकाशित करने लगेगा। जब हम सत्य को दृढ़तापूर्वक पकड़ सकेंगे, तब पहले हमने जो कुछ भी त्याग किया था, वह फिर एक नया रूप-आकार धारण कर लेगा, एक नये आलोक में प्रकट

होगा और ब्रह्ममय हो जाएगा। सब कुछ एक उदात्त भाव धारण कर लेगा और तब हम सभी पदार्थों को उनके सत्यलोक में समझ सकेंगे। किंतु पहले हमें उन सबका त्याग करना होगा, बाद में सत्य का आभास पाने पर हम पुनः उन सबको ग्रहण कर लेंगे, पर अब ब्रह्म के रूप में। &Lohel R kua

सम्पादकीय

सृष्टि का सृजनकर्ता ईश्वर एक है किन्तु उसके नाम अनेक हैं। मानव-जाति भी एक है। हम सब सृष्टि के रचयिता एक ही परमात्मन की कलाकृति और भाई-भाई हैं। अपने भाइयों से द्रोह किसी भी सूरत में श्रेयस्कर नहीं है। सब मिलजुल कर भाईचारे के साथ आपसी सहयोग और सौहार्द से रहो क्योंकि इस धरती पर कोई बेगाना नहीं है। सबको चाहिए कि वे शान्ति से रहें और जीयें तथा शान्ति से धरती के अपने भाइयों को भी जीने दें। किसी की हत्या न करें किसी को नहीं लूटे और किसी को किसी भी प्रकार की पीड़ा न दें। पापों का भार न बढ़ाएँ चूँकि पापों का प्रतिफल भोगना ही पड़ेगा। आदमी को भोजन, वस्त्र और निवास स्थल पूर्ण ईमानदारी से काम करने पर भी उपलब्ध हो सकते हैं। शान्तिकामी लोगों को चाहिए कि वे सुखी जीवन के लिए अपव्यय और दुर्व्यसनों से अपने आपको अवश्य बचाये रखें जीवन से निठल्लेपन को निकाल दें और उपलब्ध समय का पूर्ण सदुपयोग करें। घर में सबसे प्रेमपूर्वक रहें और बड़ों का आदर करें। स्वाध्याय और सत्संग के लिए रात को सोने तक भी अपनी सुविधानुसार प्रतिदिन कुछ नियमित समय अवश्य निकालें। सोते समय मस्तिष्क के विचारों के सम्पूर्ण बोझ को उतार दें और हृदय से एकाग्र होकर ईश्वर स्मरण करते हुए सो जायें ताकि स्वस्थ और निर्दोष नींद आ सके, परिणामस्वरूप तन-मन का आरोग्य प्राप्त करके एवं उसे बनाये रख कर सुखी रह सकें। ब्रह्ममुहूर्त एवं भोर में शुभ दिशा में किया गया नियमित चिंतन तुम्हारे जीवन को श्रेष्ठतम दिशा दिये रखने में मदद करेगा। अतीत के बुरे भले संचित कर्मों से वर्तमान जीवन अवश्य प्रभावित होता रहता है। शरीर के साथ कर्मों के सृजन में मानसिक सोच ही जिम्मेदार होती है। मानसिक सोच को सत्य करुणा और पवित्रता का दायरा मत लांघने दो। अपने को बिना लगाम के घोड़े की तरह मत छोड़ो तथा पवित्र नियमों में जीवन को बाध कर रखो। आलस्य से बचो और कर्तव्य से भूलकर भी मत डिगो। जीना सीखो ताकि तुम्हें शान्ति से मरना भी आ जाये क्योंकि जन्मने वाले की मृत्यु निश्चित है। पाप आदमी की भूलें-चूकें हैं जिनमें सुधार संभव है। आज हम जितने बुरे हैं, कल हम उतने ही अच्छे बन सकते हैं। मेरे आदरणीय और प्रिय पाठक! अभी से दृढ़ निश्चय करे कि वहा प्रत्यक्षा अपनी तमाम बुराईयों को छोड़ रहा है, विश्वास करों आप अपने अगले कदमों एवं भविष्य में होने वाली सभी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष बुराईयों से बच सकोगे। यही बुराई से भलाई की तरफ बढ़ने और जीवनशोधन की प्रक्रिया है जो सब प्रकार से कल्याणकारी है।

रोचक जानकरियाँ

- 1 विश्व में सबसे कठोर कानून वाला देश कौन सा है?
उत्तर- सऊदी अरब
- 2 विश्व का ऐसा कौन सा देश है जो आज तक किसी का गुलाम नहीं हुआ?
उत्तर - नेपाल
- 3 विश्व में सबसे अधिक वेतन किसे मिलता है?
उत्तर- अमेरिका के राष्ट्रपति को
- 4 विश्व के किस देश में सफेद हाथी पाये जाते हैं?
उत्तर - थाईलैंड

मान्यता है कि एकमात्र पूर्ण अवतार श्री कृष्ण ही हुए हैं। बाकी अवतार अंश यानी छह,आठ,दस या बारह कलाओं के अवतार हैं। श्रीकृष्ण सोलह कलाओं के अवतार हैं। सोलह कलाओं में मनुष्य और दिव्य की जो भी क्षमतायें हो सकती हैं, पूरी तरह निखर कर आती हैं। फिर श्रीकृष्ण स्वयं भी कहते हैं कि मैं अव्यय पुरुष हूँ। मुझे ही केन्द्र में रखकर सृष्टि का विकास हुआ है। उनके श्री मुख से जो कहा गया है, वह गूढ़ अर्थ रखता है। विकास हुआ अर्थात् वह फूल की तरह खिली। श्रीकृष्ण उस खिलावट के केन्द्र में हैं तो हम सब उन्ही के अंश हैं। सत्व, रज और तम के कुछ विकार भी अपने से जुड़े होते हैं। श्रीकृष्ण जब सब कुछ छोड़कर जैसी भी स्थिति में हो अपनी शरण में आने के लिये कहते हैं तो आशय यही है कि उन्हें अपने भीतर ढूँढ़ लें। श्रीकृष्ण, भगवान विष्णु के अवतार

आनंद के पर्याय है-श्रीकृष्ण



हैं। वे स्वयं विष्णु हैं, अवतार भी हैं और मनुष्य के रूप में वासुदेव और देवकी के पुत्र भी हैं। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु सृष्टि के प्रथम अक्षर पुरुष हैं, उन्हीं की नाभि से ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं और ब्रह्मा से भगवान शिव। ब्रह्मा के नेत्रों से उत्पन्न

प्रकृति के प्रतिनिधि रहे। प्रकृति की हर चीज हँसती-गाती हैं। हवा, पानी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, आकाश आदि सबका अपना संगीत है। कृष्ण के व्यक्तित्व का कण-कण प्रफुल्लित रहता है। उनके अंग-अंग में संगीत बहता है। उनकी मुस्कुराहट देखकर हर किसी का मन प्रसन्न हो जाता है। यह मुस्कान आसानी से नहीं आ सकती। श्रीकृष्ण की गीता के अनुसार उसके लिये मन बहुत पवित्र चाहिये। मन में कुछ दूसरों के लिये करने का भाव होना चाहिये। कुछ मांगे या अपेक्षा किये बिना जो किया जाता है, उसे प्रसन्नता आती है। कृष्ण ने ही परिस्थिति को हँसकर जिया। जीवन को स्वभाविक ढंग से, खेल-खेल में जी कर दिखा गए। इसलिये कोई व्यक्ति अथवा परिस्थिति उन्हें खिन्न नहीं कर सकी। कृष्ण आनन्द के पर्याय बने रहे।

अदरक का खाँसी में उपयोग



अदरक खाँसी के लिए नेचुरल दवाई है। अदरक के कुछ टुकड़े 1 कप पानी में उबाल लें, फिर इसमें 2 चम्मच शहद मिलाएँ और इसे दिन में 2-3 बार पियें। खाँसी में जरूर आराम मिलेगा। इसके अलावा आप अदरक के कुछ टुकड़े ऐसे ही चबा सकते हैं।

अभिमान का मूल कारण है अज्ञान

एक बार एक सज्जन एक साहूकार की हवेली में गए। साहूकार का बहुत बड़ा कारोबार था। बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ और बड़ी जायदाद थीं। जब उस सज्जन ने परमार्थ की चर्चा करनी शुरू की तो साहूकार ने और बातें करनी शुरू कर दीं कि मेरी इतनी प्रोपर्टी है, मेरे इतने कारखाने हैं, मेरा तो इस शहर में बड़ा बोलबाला है, मुझे सब अच्छी तरह जानते हैं, सरकारी महकमों में भी मुझे जानते हैं, पुलिस डिपार्टमेंट में भी मुझे सभी जानते हैं। मेरी जायदाद इतनी है कि और किसी के पास इतनी नहीं होगी।

इस प्रकार वह अपनी धन-दौलत और कारखानों का जिक्र करता जा रहा था। वह सज्जन महात्मा सुनता रहा। महापुरुष तो सहनशीलता वाले होते हैं और विधि से काम लेते हैं। अभिमान का अभिमान ताड़ने के लिए कठोरता ही नहीं, मुक्ति का भी सहारा लेने की जरूरत होती है। तब उस सज्जन ने मन-ही-मन कहा, 'इस साहूकार के गुरु को तोड़ना चाहिए और हकीकत इसकी आँखों के सामने लानी चाहिए। मुझे यह काम इस ढंग से करना चाहिए, जो वह ग्रहण भी कर सके और हजम भी कर सके।'

उन दोनों के पास ही मेज-कुर्सी लगाए उस साहूकार का बेटा भी पढ़ रहा था। सज्जन पुरुष ने उस बच्चे से कहा - "बेटा आप क्या पढ़ रहे हैं?" बच्चा बोला - "अंकल! मैं भूगोल पढ़ रहा हूँ।" सज्जन पुरुष ने पुनः पूछा - "बेटा वह तुम्हारे सामने क्या रखा है?" बच्चा बोला - "अंकल! यह एटलस है। इसमें दुनिया का नक्शा है।" सज्जन पुरुष ने एटलस ले लिया और बच्चे से बोले - "बेटे, इसमें तुम्हारा प्रदेश कहां है, हम भी तो देखें कहां पर है?" बच्चे ने उस खड़े नक्शे के एक छोटे-से हिस्से की ओर इशारा किया और बोला - "यह देखो, एक बेर जितना यह हमारा प्रदेश है।" सज्जन पुरुष ने फिर पूछा

"बेटे, इसमें तुम्हारा नगर कहां है?" बच्चा बोला - "यह देखो, यह जो छोटा-सा बिंदु नजर आ रहा है, यहा पर हमारा नगर है।" सज्जन पुरुष फिर बोला - "अच्छा बेटा, अब यह बताओ कि इस नगर में आपके पिताजी की फैक्ट्रियाँ कहां हैं और यह जो महल है, बताओ, यह सब कहां पर है?" यह सुनकर बच्चा झुंझलाकर बोला - "आप अजीब बात करते हैं। इतनी बड़ी इस दुनिया मे नक्शे में, जहां इतना बड़ा नगर भी एक बिंदी जितना दिखाया गया है, आप इसमें हमारी फैक्ट्रियाँ और हमारे महल ढूँढ़ रहे हैं, बड़ी अजीब-सी बात करे हैं आप।" बच्चे की बात पर वह सज्जन हंस पड़े। साहूकार भी उस सज्जन और अपने बेटे का वार्तालाप सुन रहा था। उनकी बातें सुनकर साहूकार को समझ आ गया कि मेरा ऐसा सोचना और मेरा हरदम यही कहना अर्थहीन है। इतनी बड़ी दुनिया का केवल नक्शा ही सामने आया है, जिसमें इतना विशाल नगर एक बिंदी के समान है। इस दाता की रचना में तो कितने-कितने सूर्य-मण्डल हैं, उनकी तो कोई थाह ही नहीं पाई जा सकती। मैं हूँ ही क्या? परमात्मा की प्रभुता का भान होते ही उसका अंहकार भाग गया। उसे पता चल गया कि उसके पास ऐसा कुछ विशेष नहीं, जिस पर वह अभिमान कर सके। परमात्मा की सृष्टि में उसकी स्थिति एक तिनके से भी कम है। अभिमान का मूल कारण अज्ञान है। अज्ञान के कारण अंहकार और अंहकार के कारण झगड़े होते हैं। जिसने महापुरुषों के वचनों को सुनकर, उनके जीवन को देखकर प्रेरणा नहीं ली और अपनी ही तंगदिली और तंग दृष्टि में रहे, अभिमान - अंहकारी बने रहे, आज उनके प्रति हमारे मन में कोई श्रद्धा कोई सत्कार की भावना नहीं है। और फिर इंसान अंहकार करे तो किसका? आखिर उसके पास है क्या, जिस पर वह अभिमान करे।

800 स्कूल ड्रेस का निःशुल्क वितरण



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सामग्री व स्कूल गणवेश का वितरण किया गया। निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि भीण्डर के आसपास के क्षेत्र में स्कूली बच्चों को 800 गणवेश का वितरण किया गया।

स्वस्थ रहने के उपाय



1. खाने में गुड़ या मिर्ची का प्रयोग करें, चीनी के प्रयोग से बचें।
2. नमक का अधिक सेवन न करें। आयोडिन युक्त समुद्री नमक का उपयोग बिल्कुल भी नही करें। सेधां, काला या डली वाला नमक इस्तेमाल करें।
3. मेदा, ज्यादा नमक और चीनी ये तीनों सफेद जहर है इनके प्रयोग से बचें।
4. हमेशा साधारण पानी से नहाएँ और पहले सर पर पानी डाले फिर पेटो पर और अगर गरम से नहाओ तो हमेशा पहले पेटो पर फिर सर पर पानी डालना चाहिये।
5. हमेशा पीठ को सीधी रख कर बैठे।
6. सर्दियों में हॉट के फटने से बचने के लिए नहाने से पहले नाभि मे सरसों के तेल लगाये। जबरदस्त लाभ मिलता है।
7. शाम के खाने के बाद 2 घंटे तक न सोये। 5 से 10 मिनट वज्रासन में बैठे। और यदि संभव होतो 1000 कदम वाक जरूर करें।
8. खाना हमेशा ऐसी जगह पकाया जाये जहां वायु और सूर्य दोनों का स्पर्श खाने को मिल सके।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़



सत्संग
चैनल पर सीधा प्रसारण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दितां की सेवा में सतत संस्कारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

एवं

श्रीमान श्याम लाल गोयल, दीपक गोयल (मेरठ) द्वारा आयोजित

श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह

भक्ति ज्ञान यज्ञ

दिनांक एवं समय
24 से 30 जुलाई, 2016
दोपहर 3.00 बजे से सांय 6.30 बजे तक

स्थान : राधा गोविन्द मण्डप
गढ़ रोड, मेरठ।

आयोजक : श्रीमान श्याम लाल गोयल, दीपक गोयल (मेरठ)
कथा व्यासः पुज्य संजय कृष्ण जी 'सलिल'

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से आंजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करावेंगे। आपश्रीं सं अनुगोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्रः 09927992922, 09917685525
संस्थान सम्पर्क सूत्रः 0294-6622222, 9649499999

प्रश्नान्त अग्रवाल 'सैगक'
अनार्यादीय अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

<p>कथा व्यास पुज्य संजय कृष्ण जी 'सलिल'</p> <p>कैलाश 'मानव' मैनेजिंग ट्रेडी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान</p>	<p>वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>
--	---	---	--

जगदीश आर्य
ट्रेडी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा
ट्रेडी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।